भाग - चार

निबंध-लेखन

निबंध - लेखन

निबंध वह गद्य-रचना है जिसमें किसी विषय पर अपने विचारों को एक सीमित आकार में तथा विषय के अनुरूप भाषा शैली में व्यक्त किया गया हो । निबंध शब्द में 'बंध' धातु में 'नि' उपसर्ग लगाया गया है । इसका अर्थ होता है भली प्रकार से बाँधना अर्थात् विषयानुरूप विचारों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना । इसमें भाव या विचार पूरी तरह से एक-दूसरे से बंधे रहते हैं । इसमें विषय के किसी एक पक्ष का विवेचन होता है । यह अपने आप में पूर्ण होता है ।

निबंध लेखन में विषय सामग्री तथा निबंध शैली दोनों महत्वपूर्ण हैं । विषय सामग्री के लिए अध्ययन, मनन एवं चिंतन की आवश्यकता होती है। शैली में गंभीरता, प्रवाहशीलता तथा प्रभावशीलता आवश्यक होती है ।

आदर्श निबंध के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें ।

1. निबंध लिखने से पूर्व हमें विषय का सही चयन करना चाहिए ।
2. ऐसा विषय चुनें जिसके बारे में अच्छी तरह से जानते हों ।
3. चयनित विषय पर चिंतन मनन करें ।
4. निबंध की रूपरेखा सुव्यवस्थित ढंग से तैयार कर लेनी चाहिए ।
5. रूप-रेखा के अन्तर्गत आरंभ, मध्य, अंत, लाभ-हानि, निष्कर्ष जैसे खण्ड शामिल किए जा सकते हैं ।
6. प्रस्तावना में विषय का परिचय तथा महत्व स्पष्ट करना चाहिए ।
7. सतर्कतापूर्वक वर्तनी की अशुद्धियों पर ध्यान देकर लिखना चाहिए ।
8. विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग आवश्यक है ।
9. अनावश्यक शब्दों का प्रयोग तथा विचारों का दुहराव न हो ।
10. एक भाव या विचार समाप्त होने पर अनुच्छेद परिवर्तन करना चाहिए ।
11. अपने विचारों की पुष्टि के लिए विद्वानों के उद्धरण के उदाहरण, कविता की पंक्तियाँ या कोई रोचक प्रसंग भी लिखा जा सकता है ।
12. उदाहरण निबंध को रोचक, प्रभावशाली एवं सरस बनाते हैं ।
13. कहावतों एवं मुहावरों के प्रयोग से भी निबंध विशिष्ट बनता है ।
14. उपसंहार में निबंध का सारांश एक अनुच्छेद में लिखना चाहिए ।
15. अंत किसी कविता की पंक्ति से भी किया जा सकता है ।
16. निबंध साफ और सुन्दर होना चाहिए ।
17. निबंध लिख लेने के पश्चात् उसे पढ़कर अशुद्धियाँ दूर कर लेनी चाहिए ।

उपर्युक्त प्रकार से लिखा गया निबंध उत्कृष्ट होगा ।

मूल्यबोध संबंधी निबंध

परोपकार

रूपरेखा - (i) प्रस्तावना (ii) परोपकार का अर्थ एवं महत्व (iii) परोपकार एक विशेष गुण (iv) परोपकार के उदाहरण (v) परोपकार के लक्षण (vi) परोपकार से लाभ (vii) उपसंहार

प्रस्तावना - मनुष्य एवं पशु में आहार, निद्रा, भय आदि प्रवृत्तियाँ समान होती हैं लेकिन भाव, विचार और वाणी की दृष्टि से वे पशुओं से अलग होते हैं । मनुष्य बोल सकता है तथा सोच भी सकता है । मनुष्य में कई ऐसे अच्छे और बुरे गुण होते हैं जिनसे अच्छे और बुरे मनुष्य के रूप में उसकी पहचान होती है । सेवा, प्रेम, सद्भाव, परोपकार जैसे गुण अच्छे गुणों में शामिल होते हैं ।

परोपकार का अर्थ : - परोपकार दो शब्दों से मिलकर बना है । 'पर' का अर्थ है 'दूसरे का' तथा 'उपकार' का अर्थ है 'भलाई' । इस प्रकार परोपकार का अर्थ है- नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना ।

महत्व :

परोपकार का गुण मानव को विशिष्ट बनाता है । सभी धर्मों में परोपकार करने की बात कही गई है । यह वह गुण है जो मानव को मानव से अलग करता है । परोपकारी मनुष्य देवता तुल्य होता है । जो मानव सिर्फ अपने जीवन तक सीमित है, जिसमें परोपकार की भावना नहीं है, वह पशु तुल्य होता है । हमारे महापुरुषों ने जो परोपकार किए उन्हीं के कारण हम प्रगति कर सके । परोपकारी व्यक्ति का जीवन उस नदी की तरह होता है जो स्वयं अपना पानी कभी नहीं पीती । भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करदेने वाले क्रान्तिकारियों ने यह कभी नहीं सोचा कि इस स्वतंत्रता का उपभोग वे कर पाएँगे या नहीं । फिर भी उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा । यही परोपकार है ।

परोपकार एक विशेष गुण : मानव का यह गुण दैवीय गुण कहलाता है । संसार की प्राकृतिक शक्तियाँ भी परोपकार की भावना से ही संचालित होती हैं । सूर्य अपना प्रकाश दूसरों को समर्पित करता है । नदियाँ अपना जल देकर दूसरों की प्यास बुझाती हैं । वृक्ष अपना फल स्वयं ग्रहण नहीं करते । कहा भी गया है-

निज हेतु बरसता नहीं, व्योम से पानी
हम हों समष्टि के लिए, व्यष्टि बलिदानी ।

परोपकार के लक्षण : परोपकारी व्यक्ति की विशेषताएँ बताते हुए तुलसीदास कहते हैं-

संत हृदय-नवनीत समाना/कहा कवित पै कहै ना जाना ।
निज परिताप द्रवै नवनीता । पर दु:ख द्रवहिं सुसंत पुनीता ।।

परोपकार में भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी देना, रोगी की चिकित्सा करना, अनपढ़ को शिक्षित करना, अन्धे को राह दिखाना, वृक्ष लगाना, कुँआ, धर्मशाला, मन्दिर बनवाना आदि अनेक कार्य हैं जो परोपकार के प्रतीक हैं । ऋषि दधीचि, राजा शिवि तथा महादानी कर्ण जैसे परोपकारी व्यक्ति से हमारा इतिहास भरा पड़ा है । परोपकारी व्यक्ति कीडे-मकोड़े, पशु-पक्षियों का भी ध्यान रखते हैं ।

परोपकार से लाभ : परोपकार के अनेक लाभ हैं । इस धरती एवं मानवता का समस्त विकास परोपकार से हो सका है । इसी भावना से ही परिचलित होकर मानव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सपने देख रहा है ।

परोपकार करने में व्यक्ति के हृदय में सुख-शान्ति एवं आत्मविश्वास का संचार होता है । परोपकार से मनुष्य का व्यक्तित्व विकसित होता है ।

उपसंहार : मानव को परोपकार करना चाहिए क्योंकि इससे पूरी मानव जाति का भला हो सकता है । कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-

''वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।''

•

राष्ट्रीय एकता

रूपरेखा : अर्थ और महत्व, भारत में विभिन्नता, अनेकता में एकता, राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्व, परस्पर संघर्ष के दुष्परिणाम, समाधान, उपसंहार ।

अर्थ और महत्व : राष्ट्रीय एकता का तात्पर्य है- राष्ट्र के सभी तत्वों में भिन्न-भिन्न विचारों और भिन्न समस्याओं के होते हुए भी आपसी प्रेम, एकता और भाईचारे का बने रहना । महात्मा गाँधी ने कहा है- ''हमें एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें विभिन्न धर्मो के मानने वाले लोग रहते हों, लेकिन वे भाइयों की तरह रहते हों ।'' महात्मा गांधी का यह कथन भारत की राष्ट्रीय एकता का मूल मंत्र है, जहाँ विभिन्न धर्मो के लोग साथ-साथ रहते हैं ।

भारत में विभिन्नता : भारत अनेकताओं का देश है । यहाँ अनेक धर्मो, जातियों, वर्गो, सम्प्रदायों और भाषाओं के लोग बसते हैं । साथ ही यहाँ के लोगों का खान-पान, रहन-सहन और पहनावा भी अलग अलग हैं । आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक असमानताएँ भी हैं ।

राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्व : राष्ट्रीय एकता के लिए अनेक बाधक तत्व हैं । सबसे बड़ा बाधक है यहाँ की गंदी और दूषित राजनीति । यहाँ के स्वार्थपरक नेता वोट लेने तथा सत्ता हथियाने के लिए अल्प संख्यकों के बीच विरोध का बीज बोते हैं । आरक्षण के नाम पर पिछड़े वर्गों को देश की मुख्य धारा से अलग करते हैं, साम्प्रदायिक दगें करवाते हैं, जिनका कोई औचित्य नहीं है। इस देश में हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई अनेक धर्मों के लोग परस्पर मिलकर रहना चाहते हैं, लेकिन भ्रष्ट राज नेता धर्म के नाम पर उन्हें बाँट देते हैं । विभिन्न धार्मिक नेता, आर्थिक असमनता, जातिगत असमानता राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्व हैं । भाषा की समस्या भी एक बड़ी समस्या है ।

अनेकता में एकता : भारत में विभिन्नता के होते हुए भी एकता के तत्व विद्यमान हैं । यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एक-दूसरे के धर्म का आदर करते हैं । सभी जातियाँ घुल-मिल कर रहते हुए संकट आने पर एक-दूसरे की सहायता करती हैं, एक दूसरे के प्रति सहनशील होती हैं।

परस्पर संघर्ष के दुष्परिणाम : किसी भी देश के मुख्य राजनीतिक दल सत्ता के लिए संघर्ष करते हैं तो उसका परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ता है । चाहे गोधरा कांड हो, चाहे आरक्षण का मामला हो या चाहे अयोध्या के राम मन्दिर का । ये घटनाएँ पूरे देश की जनता के जीवन को प्रभावित करती हैं ।

उपसंहार : प्रश्न यह है कि देश में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा कैसे मिले । इसके लिए यह आवश्यक है कि असमानता वाले कानून समाप्त कर पूरे देश में एक समान कानून लागू किया जाय । सभी नागरिकों को एक समान अधिकार प्राप्त हो । अंग्रेजी को सम्पर्क भाषा है रूप में प्रयोग कर हिन्दी भाषा को पूरे देश में लागू किया जाय तथा लोगों के हृदय में परस्पर आदर का भाव जगाया जाय । तभी राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा ।

•

दीपावली

विचार बिंदु - (i) भूमिका (ii) ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक प्रसंग (iii) व्यापारियों का प्रिय उत्सव (iv) महत्व ।

भूमिका : भारत देश त्योहारों का देश है । यहाँ होली, दीपावली, दशहरा, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, रामनवमी, पोंगल आदि अनेक त्योहार मनाए जाते हैं । दीपावली हिन्दुओं का एक महत्वपूर्ण त्योहार है । यह कार्तिकमास की अमावस्या की रात्रि में मनाया जाता है । मुख्यत: इसे वैश्यों का त्योहार कहा जाता है । 'दीपावली' शब्द दीप+आवली से मिलकर बना है । इस रात को घर-घर में दीपक जलाए जाते हैं । इसलिए इसे दीपावली कहा गया है । दीपावली का साधारण अर्थ दीपों की पंक्ति का उत्सव है । दीपक का प्रकाश ज्ञान व उल्लास का प्रतीक है ।

ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक प्रसंग : ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान श्रीराम रावण का संहार करने के पश्चात वापस अयोध्या लौटे थे । उनके लौटने की खुशी में लोगों ने घी के दीपक जलाये थे । भगवान महावीर तथा स्वामी दयानंद ने इस तिथि को निर्वाण प्राप्त किया था । इसलिए जैन सम्प्रदाय तथा आर्य समाज में भी इस दिन का विशेष महत्व है । सिखों के छठे गुरु भगवान हरगोविंद सिंह इस दिन कारावास से मुक्त हुए थे । इस त्योहार का आरंभ धन तेरस से होता है । इस दिन धन्वतंरी जी की भी पूजा होती है । चर्तुदशी को नरक चर्तुदशी मनाया जाता है । इस दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध किया था । फिर दीपावली मनायी जाती है । इसके दूसरे दिन भाई दूज और फिर गोवर्धन की पूजा की जाती है। बंगाली लोग इस दिन माँ काली की पूजा करते हैं ।

इस दिन घरों की सफाई की जाती है । घरों में मिट्टी के दीये जलाए जाते हैं । सारा घर प्रकाश से जगमगा उठता है । बच्चे पटाखों और मिठाइयों का आनंद लेते हैं । इस दिन व्यापारियों का नया वर्ष शुरू होता है । व्यापारी इस दिन लक्ष्मी की पूजा करते हैं तथा नए खाते की शुरूआत करते हैं ।

महत्व : यह आशा, प्रकाश, शान एवं सौहार्द का पर्व है । किन्तु इस दिन कुछ लोग मदिरापान करते हैं तथा जुआ खेलते हैं । इस बुरी प्रथा का अंत होना चाहिए । अन्यथा यह बुरी प्रथा आने वाली पीढ़ी के लिए अभिशाप सिद्ध होगी । दीपावली तो आनंद और हर्ष का त्योहार है । इसे आनन्द से ही मनाना चाहिए, यह हमारे जीवन में प्रेम, उत्साह और आनंद का संचार करता है ।

अभ्यास के लिए निबंध :

1. होली
2. दीपावली
3. रक्षाबंधन
4. ईद
5. स्वतंत्रता दिवस
6. गणतंत्र दिवस
7. अनेकता में एकता
8. राष्ट्रभाषा - हिन्दी
9. आदर्श विद्यार्थी
10. छात्र अनुशासन
11. परोपकार
12. सदाचार
13. कर्त्तव्य
14. मित्रता
15. जीवन में अनुशासन का महत्व
16. खेलों का महत्व
17. खाली समय का उपयोग
18. मेरे जीवन का लक्ष्य
19. शिक्षक दिवस समारोह
20. बाल दिवस समारोह
21. जीवन में ज्ञान का महत्व

प्रार्थना

मनसा सततं स्मरणीयम्
बचसा सततं बदनीयम्
लोकहितं मम करणीयम्

मनसा -०-

न मोगभवनं रमणीयम्
न च सुख शयने शयनीयम्
अहर्निशं जागरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम्

मनसा -१-

न जातु दुःख गणनीयम्
न च निजसौख्यं मननीयम्
कर्मक्षेत्रे तरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम्

मनसा -२-

प्रार्थना

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है।
ओम् है करता विधाता, ओम् पालनहार है।

ओम् है दुःख का विनाशक, ओम् सर्वानन्द है।
ओम् है बल-तेजधारी, ओम् करुणाकन्द है।।
ओम् सबका पूज्य है, हम ओम् को पूजन करे।
ओम् ही के ध्यान से हम, शुद्ध अपना मन करें।

ओम् के गुरु मंत्र जपने से, रहेगा सुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढेगी, धर्म में होगी लगन।।
ओम् के जप से हमारा ज्ञान बढता जाएगा।
अन्त में यही ओम् हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा।

''राष्ट्रीय गान''

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग,
विन्ध्य, हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल-जलधि तरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगल-दायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।